अध्याय 1

दो बैलों की कथा (प्रेमचंद)

class 9th
sub hindi
date 15/4/20
read chapter

पाठ की रूपरेखा

नीति-विषयक मूल्यों पर आधारित प्रस्तुत कहानी (दो बैलों की कथा) के माध्यम से प्रेमचंद ने भारतीय कृषक, समाज में पशु और मनुष्य के भावात्मक संबंधों का जीवंत और उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। मुंशी प्रेमचंद ने यह बोध कराने का प्रयास भी किया है कि स्वतंत्रता जन्म सिद्ध अधिकार है, परंतु स्वतंत्रता सहजता से प्राप्त नहीं हो पाती। उसके लिए निरंतर संघर्ष करते हुए प्रयासरत रहना पड़ता है।

लेखक-परिचय

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचंद का जन्म 1880 ई. में लमही गाँव (बनारस) में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था। उन्हें बचपन से ही कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। असहयोग आंदोलन में भाग लेने के दौरान सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर उन्होंने लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया। वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे, बाद में प्रेमचंद के नाम से वे लेखन कार्य करने लगे।

प्रेमचंद की कहानियाँ आठ भागों में 'मानसरोवर' में संकलित हैं। उनके प्रमुख उपन्यास हैं–सेवासदन, प्रेमाश्रय, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि और गोदान। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में किसानों की दुर्दशा, शोषितों की व्यथा, समाज में स्त्री की दुर्दशा आदि का चित्रण किया है।

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में सरल व सहज भाषा का प्रयोग किया है, जिसके कारण उनकी रचनाएँ आम जनता में लोकप्रिय हैं। उन्होंने बड़ी-से-बड़ी बात को सरल शब्दावली में प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में तत्सम, तद्भव, अरबी एवं फ़ारसी के शब्दों का कुशल प्रयोग मिलता है। प्रेमचंद का निधन वर्ष 1936 में हुआ था।

पाठ का सार

हीरा एवं मोती का आपसी प्रेम

झूरी नामक किसान के पास हीरा और मोती नामक दो बैल थे, जो अत्यंत हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ एवं सुंदर थे। दोनों में एक भावनात्मक घनिष्ठ संबंध था। झूरी अपने दोनों बैलों को बहुत ही प्यार से रखता था। दोनों बैलों में इतनी अच्छी मित्रता थी कि वे एक ही साथ खाने के लिए नाँद में मुँह डालते। एक भूखा रहता, तो दूसरा भी नहीं खाता। दोनों कोशिश करते कि दूसरे के कंधे पर ज़्यादा बोझ न पड़े। स्नेह जताने के लिए वे कभी एक-दूसरे को चाटते, तो कभी सूँघते। एक दिन झूरी का साला (पत्नी का भाई) गया अपना खेत जोतने के लिए दोनों बैलों को अपने घर ले गया। हीरा और मोती अत्यंत दुःखी हुए। उन्हें लगा कि उनके मालिक ने उन्हें बेच दिया है। वे किसी भी तरह गया के साथ जाने को तैयार नहीं थे। बहुत ही मुश्किल से ज़ोर-ज़बरदस्ती के बाद वे उसके घर तक पहुँच गए, लेकिन वहाँ रुकना उनके लिए कठिन था।

हीरा और मोती का भागना

हीरा और मोती दोनों एक-दूसरे की आँखों की भाषा अथवा मूक भाषा समझते थे। दोनों ने आँखों-ही-आँखों में वहाँ से भाग जाने की योजना बनाई। रात के समय दोनों अपनी-अपनी रस्सी तोड़कर अपने मालिक झूरी के घर वापस आ गए। सवेरा होते ही जब झूरी ने बैलों को थान पर खड़े देखा, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह बहुत खुश हुआ, उसकी बाँछें खिल गईं। बच्चों ने खुशी से स्वागत किया, किंतु झूरी की पत्नी लाल-पीली हो गई। क्रोध में आकर झूरी की पत्नी ने बैलों की खुराक को भी कम कर दिया।

बैलों का वापस गया के घर जाना और यातनामय जीवन जीना

दूसरे दिन फिर झूरी का साला गया आया और बैलों को मोटी रस्सी से बाँधकर अपने घर ले गया। बैलों के साथ अब वह रूखा व्यवहार करने लगा। सूखा भूसा खाने में देता, दिनभर हल में जोतता। हीरा और मोती ने कभी ऐसी कल्पना भी नहीं की थी कि उनका जीवन इतना नरकमय व्यतीत होगा। परिणामस्वरूप वे दिन-प्रतिदिन कमज़ोर होते गए। कभी-कभी दोनों बैल अड़ जाते और एक कदम भी नहीं उठाते, तो गया उन्हें डंडे से बहुत मारता। दोनों बैल वहाँ से भाग जाने का निरंतर प्रयास करते रहे, लेकिन भाग नहीं पाए।

बैलों के प्रति बच्ची का प्रेमपूर्ण व्यवहार

उसी घर में एक नन्ही बच्ची रोज़ रात को उन दोनों को दो रोटियाँ खिला जाती, जिससे प्रेम के भूखे बैलों की आत्मा तृप्त हो जाती, परंतु पेट की भूख ज्यों-की-त्यों बनी रहती। प्रेम के इस प्रसाद से उनका साहस और हौसला बना रहा। रोटी देने वाली बच्ची मैरों की थी। उसकी माँ नहीं थी, सौतेली माँ उससे अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। बैलों की दुर्दशा बच्ची से देखी नहीं गई। एक दिन उसने बैलों की रस्सी खोल दी। उनके पास भाग जाने का अच्छा मौका था, परंतु दोनों बैलों ने आपस में आँखों-ही-आँखों में इशारा किया कि उनके जाने के बाद बच्ची पर अन्याय होगा, इस आशंका से वे नहीं भागे।

बैलों का पुन: घर से भागना और कांजीहौस पहुँच जाना

बच्ची ने अचानक ललकारा कि फूफा वाले बैल भागे जा रहे हैं, अब हीरा और मोती के पास कोई चारा न था। गया को आता देख दोनों जान हथेली पर लेकर भाग खड़े हुए। गया ने बहुत कोशिश की, किंतु वे हाथ न आए। भागते-भागते वे मटर के खेत में पहुँचे। वे रास्ता भटक चुके थे और भूख से व्याकुल हुए जा रहे थे, इसलिए दोनों अपनी भूख मिटाने के लिए मटर खाने को खेत में चले गए। खेत से अभी वे निकले ही थे कि उनका सामना एक साँड़ से हो गया। दोनों ने मिलकर साँड़ का सामना किया। साँड़ घायल होकर वहाँ से भाग निकला। उन्हें घर (झूरी के घर) का रास्ता पता नहीं था।

अभी वे घर पहुँचने के बारे में सोच ही रहे थे कि पुनः मटर का खेत देख उसमें घुस गए। मटर खाता देख खेत के रखवाले ने दोनों को पकड़कर कांजीहौस में डाल दिया। वहाँ पर अन्य भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवर भी बंद थे। वहाँ से निकलने के लिए उन्होंने कांजीहौस की दीवार गिरा दी। अन्य जानवर भाग गए, किंतु हीरा अपनी रस्सी न तुड़ा सका, इसलिए मोती भी नहीं भागा। अन्य जानवरों को मुक्त कराकर दोनों संतुष्ट थे। उसके बाद हीरा और मोती एक सप्ताह तक कांजीहौस में ही रहे। वहाँ उन्हें खाने के लिए कुछ नहीं दिया जाता था। दिन में केवल एक बार पीने के लिए पानी मिलता था, जिसके कारण उनकी ठठरियाँ (हड्डियाँ) निकल आईं।

कसाई के हाथों नीलाम होना

एक दिन कांजीहौस वालों ने उन्हें एक दढ़ियल के हाथों नीलाम कर दिया, जो पेशे से कसाई था। हीरा को बहुत निराशा हुई। उसे लगा कि अब वे नहीं बचेंगे, किंतु मोती का आत्मविश्वास अभी भी बचा था। उसे भगवान पर पूरा भरोसा था। जब दोनों मित्रों को कसाई अपने साथ लेकर चला, तो जिस रास्ते पर वे जा रहे थे, उन्हें वह रास्ता परिचित-सा लगा, क्योंकि गया इसी रास्ते से उन्हें ले गया था। दोनों के शरीर में एक अजीब-सी फुर्ती आ गई। सारी थकान और दुर्बलता भी गायब होने लगी।

कसाई की पकड़ से भागकर अपने घर पहुँचना

हीरा और मोती को एक युक्ति दिखा, जिसे मोती ने पहचान लिया और हीरा से आँखों-ही-आँखों में उसने बताया कि उनका घर निकट आ गया है। दोनों बेचैन (बेचैन) हो गए और अचानक घर की ओर दौड़ पड़े। दोनों अपने थान पर आकर खड़े हो गए। वह दढ़ियल भी उनके पीछे-पीछे आ पहुँचा। तभी झूरी दोनों बैलों को देखकर दौड़ा और बारी-बारी से उन्हें गले लगाने लगा।

दढ़ियल और झूरी में बैलों को लेकर कहासुनी होने लगी। दढ़ियल उन्हें पकड़कर कहने लगा कि ये बैल मेरे हैं, मैंने कांजीहौस से नीलामी में खरीदे हैं। झूरी ने कहा कि बैल मेरे हैं, मेरे थान पर खड़े हैं। झूरी के विरोध और मोती के आक्रमण से दढ़ियल डरकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ। गाँव के लोग भी यह तमाशा देखकर खुश हो रहे थे। थोड़ी देर में नाँदों में खली, भूसा, चोकर डाल दिया गया, झूरी ने स्नेह से उन पर हाथ फेरा। दोनों मित्र अब स्वतंत्र थे, इत्मिनान (तसल्ली) से वह अपने नाँदों में खाने लगे। पूरे गाँव में उत्साह छा गया, उसी समय झूरी की पत्नी आकर दोनों बैलों के माथे को चूम लिया।